VOL- X | ISSUE- VII | JULY | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

स्वातंत्रोत्तर हिंदी महिला लेखिकाओं का कथा साहित्य और स्त्री समस्या

प्रा. डॉ. पावर आर. एस.
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
जयक्रांती कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर
(वाणिज्य एवं विज्ञान)

दुनिया भर के साहित्य में स्त्री के बारे में इतना लिखा गया है कि, शब्द कम पड़ जाएंगे। दुनिया की प्रत्येक सभ्यता और संस्कृति ने स्त्री पर अगाध लेखन किया है। वह एक साथ ही माता, पत्नी, बेटी, बहन, सास, बहू आदि भूमिकाओं में हमारे सामने आती है। "प्रारंभिक युग में स्त्री शिक्षा को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था। लेकिन आधुनिक युग में महत्व दिया जाने लगा। शिक्षा के बल पर उन्होंने रूढी, परंपराओं तथा शोषण के पिंजरे से स्वयं को मुक्त किया है। वह आज स्वयं पर होते अन्याय का खुलकर विरोध कर सकती है। इतना ही नहीं उचित कदम उठाकर और सही निर्णय लेकर अपनी रक्षा कर सकती है।"[1] आधुनिक युग में विशेष कर स्वतंत्र उत्तर युग में आने को महिला लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री समस्या को अंजाम देने का काम किया है। आधुनिक युग की नारी ने विभिन्न बंधनों से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष करना प्रारंभ किया है। अनेकों महिला लेखिकाओं ने नारीबोध सामाजिक सरोकार, दायित्व, संघर्ष, अपने अधिकार के दृष्टिकोण से साहित्य लेखन किया है। स्वातंत्रोत्तर हिंदी महिला कथा लेखन में नारी की कलम की सामर्थ्य पर दृष्टिपात करें तो निश्चय ही यह क्षेत्र अपरिमित है। अत: स्त्री लेखन की लंबी परंपरा दिखाई देती है।

"स्वतंत्रता के पश्चात सारा लेखन स्त्री मुक्ति और अस्मिता के पहचान की संघर्ष गाथा है । स्त्री लेखन एक निश्चित विस्तृत व्यक्ति चेतना और सामाजिक चेतना के रूप में उजागर हुआ। स्त्रियों में आत्मविश्वास के मार्ग में अपनी अस्मिता को ढूंढने के प्रयास में अपने जीवन में अंधेरे कोने और जटिलताओं का साहित्य रचा।"[2] स्वातंत्रोत्तर महिला लेखिकाओं की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि उन्होंने अनुभव से सीधे साक्षात्कार करने का साहस करते हुए उसे अपने कथा साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

स्वतंत्रता के पश्चात जिस तीव्रता से समाज के प्रत्येक घटक में परिवर्तन हुए इस तीव्रता से साहित्य में भी हुए हैं। कहानी, कविता और उपन्यास बदलते परिवेश के साथ नए तथ्य और नए शिल्प के साथ सामने आया। स्त्री लेखन स्वतंत्रतापूर्व भी था। बंग महिला, सुभद्रा कुमारी चौहान, उषा देवी मिश्रा, महादेवी वर्मा जैसी लेखिकाओं ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य कर रही थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिलाओं का कथा साहित्य में सार्थक हस्तक्षेप रहा। स्वातंत्रोत्तर हिंदी महिला कथा लेखिकाओं में विशेष कर कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, दीप्ति खंडेलवाल, कृष्णा अग्निहोत्री, मानिक मोहिनी, मृदुला गर्ग, मंजूल भगत, चित्रा मुद्गल, राजीसेठ, प्रतिभा वर्मा, सूर्यबाला मेहरूनिसा, मालती जोशी, नमिता सिंह, सुधा अरोड़ा, निरुपमा सोबती, मृणाल पांडे, चंद्रकांता, कुसुम आंचल, सुनीता जैन, मैत्रेयी पुष्पा, मधु काकरिया, कृष्ण अग्निहोत्री, नासिरा शर्मा, जया जादवानी आदि प्रमुख है। इन सारी महिला लेखिका होने रूढ़ियों को तोड़कर लेखन कार्य किया है। महिला कथाकारों में कृष्णा सोबती का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने 'डार से बिछड़े', 'यारों की यार', 'तीन पहाड़', 'मित्रों मरजानी', 'सूरजमुखी', 'अंधेरे के', 'सिक्का बदल गया', आदि रचनाओं के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। उषा प्रिया वांदाजी ने आज के नारी जीवन की विसंगतियों को सोचा समझा और उन्हें कृतियों में लाने का काम किया है। रुकोगी नहीं राधिका, पचपन खंबे लाल दीवारें आदि उपन्यास लिखकर नई समस्या को वाणी दी है।

नारी जीवन के विविध पक्षो पर मन्नू भंडारी ने सविस्तार लिखा है उनका यह सच है, आपका बंटी उपन्यास टूटते परिवार की कथा को विशद करता है। मन्नू भंडारी का

साहित्य महिला लेखन को एक नये स्तर पर प्रतिष्ठा प्रदान करता है। मन्नू भंडारी को महाभोज नामक उपन्यास ने शीर्ष स्थान पर पहुंचा है। मन्नू भंडारी के बाद राजी सेठ का नाम विशेष कर लिया जा सकता है। उन्होंने तत्सम उपन्यास में स्त्री जीवन की संपूर्णता को स्पष्ट किया। इन्हें संपूर्ण परिवेश तथा पत्रों की मनोवैज्ञानिक पहचान दिखाई देती है। पुरानी पीडियो और मान्यताओं की अस्वीकृति उनकी रचनाओं में उभर उभर कर आ रही है। ममता कालीया ने बेघर नरक दर नरक 'दौड़' उपन्यास में पारिवारिक विघटन बढ़ती, हुई निराशा, स्त्री यातना का व्यापक चित्रण किया है।

मैत्रेयी पुष्पाने अपनी संवेदना और निजी अनुभव द्वारा सामाजिक विसंगतियों को भी महसूस किया है। उन्होंने स्मृतिदंश, बेतवा बहती रही, ईदन्नम, चाक, झूला नट, अल्मा कबूतरी, अगनपाखी, आदि उपन्यासों के माध्यम से अपने दर्द को बाहर निकाला है। "मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य के केंद्र में नारी है, उनके साहित्य में पुरुष प्रधान समाज के प्रति आक्रोश दिखाई देता है, यह नारी स्वतंत्रता की पक्षधर है।"[3] मैत्रेयी पुष्पा एक आदर्श मुखी लेखिका है। इनका साहित्य कल्पना पर आधारित नहीं है, क्योंकि इन्होंने साहित्य का निर्माण ही नहीं किया है बल्कि जिस यथार्थ को उन्होंने भोगा या समाज में देखा है उसे ही साहित्य में चित्रित किया है, साथ ही अपने साहित्य में आदर्श को दिखाया, जिससे पाठक गण प्रेरणा लेकर भाव विभोर हो उठते हैं। वे मानवतावादी दृष्टिकोण साथ लिए है।

सन 1960 के पश्चात साहित्य जगत में श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री ने प्रवेश किया। उनके कथा साहित्य में एक ओर अनुभूति पक्ष की प्रधानता आदर्श एवं यथार्थ का स्वस्थ एवं समानुपातिक चित्रण की अपेक्षा यथार्थ की और अपेक्षाकृत अधिक झुकाव रहा है। उन्होंने 'बात एक औरत की', 'कुमारीकाए', 'टपरेवाले', 'अभिषेक', 'नीलोफर', 'निष्कृति', 'मैं अपराधी हूं' आदि उपन्यास का निर्माण कर नई समस्या को वाणी दी है। बात एक औरत की उपन्यास से सेक्स जीवन संघर्ष का उतार चढ़ाव कुंठा घुटन उत्पीड़न बड़ी ही कुशलता के साथ व्यक्त किया गया है। 'कुमारिकाये' उपन्यास वर्तमान युग की नारियों की समस्याओं को लेकर लिखा गया है। मंजुल भगत स्वातंत्रोत्तर महिला लेखीकाओं में के गांव में एक प्रमुख लेखिका रही है। उन्होंने टूटा हुआ इंद्रधनुष, लेडीज क्लब, बेगाने घर में, अनारो खातुल, तिरछी, बौछार आदि उपन्यास के माध्यम से नारी समस्या को वाणी दी है। "मंजुल भगत के उपन्यासों के सारे नारी पात्र स्नेहसिक्त माता प्रेम में पत्नी तथा दक्ष ग्रहिणी होने की साक्षी देती है। नारी के तीनों आदर्श रूप इनके प्रत्येक नारी पात्र में विद्यमान है।"[४] अपने नारी पात्रों के बारे में श्रीमती भगत का कथन है कि, मेरे पात्र न कायर है ना विद्रोही उनमें स्थितियों से टकराकर टिके रहने की क्षमता है, समस्याओं से विमुख होकर पलायन उन्होंने कभी नहीं किया। मेरे नारी पात्रों में शिक्षित आधुनिक व्रद्धाये और निम्न वर्गीय सभी है। मेरा कोई भी नारी पात्र विद्रोह के पतीग्रह नहीं त्यागता, स्थिति से जुझता जरूर है, ध्वंसात्मक विद्रोह में मेरी नायिकाओं का विश्वास नहीं। सदी के अंतिम दशक की महत्वपूर्ण लेखिका प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में सामाजिक आर्थिक वस्तु स्थिति को स्थापित करने का प्रयत्न किया है, उनके सामने स्त्री की अस्मिता का यथार्थ बोध है। उन्होंने स्त्री के संदर्भ में आर्थिक पहलुओं पर प्रकाश डाला है और वे स्त्री को एक नई दिशा देने में सफल रही है। उन्होंने 'आओ पेपे घर चले', 'तालाबंदी', 'अग्निसंभवा', 'एड्स', 'छिन्नमस्ता', 'अपने अपने चेहरे', 'पीली आंधी', स्त्री पक्ष आदि उपन्यास लिखे हैं। प्रभा खेतान की स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता को उसके अस्तित्व की पहचान के लिए आवश्यक मानती है।

स्वातंत्रोत्तर हिंदी कथा साहित्य में एक चर्चित नाम मालती जोशी का भी है। उन्होंने पाषाण युग, निष्कासन, सहचारिणी, समर्पण का सुख आदि उपन्यास के माध्यम से नई समस्याओं को वाणी दी है। उन्होंने अपने प्रत्येक उपन्यास में नारी मन के विभिन्न भावों को व्यक्त किया है।

ऊपरी कथा लेखिकाओं के अतिरिक्त क्रांति त्रिवेदी, कुसुम अंचल, दीप्ति खंडेलवाल, सूर्यबाला, निरुपमा रेवती, मृदुला गर्ग आदि महिला कथा लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से हिंदी कथा साहित्य को एक दिशा दी है। इस प्रकार इन महिला लेखिकाओं ने स्त्री के अस्तित्व को एक नया अर्थ प्रदान किया है। स्त्री के संसार में एक नई रोशनी लाने का काम, स्त्री के संसार को खूबसूरत बनाने का काम महिला लेखिकाओं ने किया है। नारी की खोई हुई प्रतिष्ठा को सम्मानित करने का काम कथा लेखिकाओं ने किया है। "संपूर्ण समाज की श्रेष्ठत का आधारभूत तत्व नारी है। स्वाधीनता के पश्चात बड़ी तादात में महिला रचनाकार उपन्यास लेखन में प्रव्रत्त हुई है। सतत सर्जनारत है। आझादी

के बाद क्या धर्म, क्या राजनीति, क्या शिक्षा और क्या समाज सभी क्षेत्रों में विसंगतियों के अम्बार लग गए जिससे नारी मन आहत और प्रभावित हुआ, फलत: वह साहित्य साधनारत हुआ।"[5]

निष्कर्षत: कहां-कहां जाए तो 21वीं सदी में प्रवेश कर रही भारतीय नारी के सामने अनेकों समस्याएं दुर्लभ पहाड़ की भांति खड़ी है। जिससे जूझती लड़की संघर्ष करती पराजित होती कहीं विजय प्राप्त कर करती नारी आगे बढ़ रही है। उसे निरंतर अपने पथ की बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) कृष्ण अग्निहोत्री की कहानियों में नारी - डॉ.बालाजी श्रीपति भुरे, पृष्ठ क्रमांक 64

२)कृतिका जनवरी-दिसंबर २०१२ का सयुक्तांक, संपादक-डॉ.विरेन्द्र सिंह यादव, पृष्ठ क्रमांक 392

३) समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी विमर्श, डॉ.मुक्ता त्यागी, पृष्ठ क्रमांक 82

४) हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, डॉ.एम. वेंकटेश्वर, पृष्ठ क्रमांक 95

५) महिला उपन्यासकारों की नारी: प्रगति एवं पीड़ा के आयाम,आ. डॉ. हरिशंकर दुबे, पृष्ठ क्रमांक 87

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com